International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
July - 2021, Volume-8, Issue-4
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

तिब्बत व्यापारः एक परम्परा

डा0 दिनेश
असिस्टेंट प्रोफेसर
समाजशास्त्र विभाग
राजकीय महाविद्यालय
कोटाबाग (नैनीताल)उत्तराखण्ड

संक्षेपः

जनजाति समुदायों की संस्कृति एवं सभ्यता सदैव हमें आकर्षित करती रही हैं। पश्चिमी नेपाल की शौका जनजाति भी ऐसी ही एक जनजाति है जिसकी संस्कृति एवं जीवन यापन के तौर तरीकों ने शोधकर्ताओं को सदैव आकर्षित किया है। शौका जनजाति पीढियों से तिब्बत से व्यापार के लिये जानी जाती रही है। शौका जनजाति में तिब्बत व्यापार के महत्व, व्यापार पद्धिति एवं व्यापार के वर्तमान स्वरूप को हम प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से जानेंगे।

संकेतकः शौका जनजाति, तिब्बत, संस्कृति, व्यापार,।

प्रस्तावनाः

समाज, संस्कृति एवं अर्थव्यवस्था किसी भी समाज के वे संगठन है जिन पर उस क्षेत्र की भौगोलिक स्थितियों का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। भौगोलिक परिस्थितियॉ उस क्षेत्र में निवास करने वाले समुदाय को अपने अनुरूप आर्थिक स्रोतों को विकसित करने को विवश करती है। फलस्वरूप क्षेत्र विशेष की पारिस्थितिकी से अपना सन्तुलन बनाये रखने के लिए तथा अपने अस्तित्व की रक्षा हेतु मानव न केवल विभिन्न सांस्कृतिक तत्वों को विकसित करता है वरन् अपनी आजीविका के लिए एक निश्चित कार्यशैली को भी जन्म देता है। जनजातीय समुदायों की अर्थव्यवस्था में पायी जाने वाली विशेषताओं का उल्लेख इस प्रकार किया जा सकता है – प्रकृति पर निर्भरता, धर्म एवं जादू टोने का महत्व, उपभोग के लिए उत्पादन, मुद्रा का न्यूनतम उपयोग, विशेषीकरण का अभाव, सामूहिकता, स्थिरता एवं उद्योगों का अभाव। शौका जनजाति के संदर्भ मे इन विशेषताओं का मूल्यांकन करें तो पता चलता है कि इन विशेषतओं के रहते भी शौका जनजाति की आर्थिक संरचना की अपनी कुछ अलग विशेषताऍ हैं। व्यापार, कृषि पशुपालन, ऊन उद्योग यह सभी विशेषताऍ शौका समुदाय की आर्थिक संरचना का हिस्सा है।

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य है कि पश्चिमी नेपाल की शौका जनजाति की आर्थिक संरचना को उसके पारम्परिक तिब्बत व्यापार के विस्तृत अध्ययन के माध्यम से करें।

तिब्बत व्यापार :

पश्चिमी नेपाल के महाकाली अंचल के दार्चुला जिले की व्यास घाटी में आवासित शौका मूल रूप से व्यापारिक जनजाति है जो सदियो से प्रतिवर्ष ग्रीष्मकाल में जुलाई से नवम्बर के मध्य तिब्बत जाकर व्यापार करती रही है। तिब्बत व्यापार शौका समुदाय का पैतृक व्यवसाय है जो समय के साथ–साथ अपना स्वरूप बदलता रहा है। प्राचीनकाल से चला आ रहा यह व्यापार शौका समुदाय के लिए आजीविका का एकमात्र साधन रहा है प्राचीनकाल में जब तिब्बत स्वतंत्र था वहॉ पांच प्रमुख मण्डियां थी जहॉ भारत की भोटिया जनजाति एवं नेपाल की 'शौका' समुदाय तिब्बतियों से व्यापार किया करते थे। ये व्यापार मण्डियां निम्न थी– 'व्यास घाटी' दार्चुला नेपाल से 'तकलाकोट मण्डी'' दारमा घाटी', पिथौरागढ़ भारत से छकरा मण्डी, 'जौहार घाटी' पिथौरागढ़ से 'ग्यानीमा मण्डी', 'नीति घाटि' चमोली भारत से 'सिब्चीलाम मण्डी', 'माना घाटी' चमोली भारत से 'छपराङ मण्डी', एवं 'व्यास घाटी' पिथौरागढ़ भारत से 'तकलाकोट मण्डी'। शौका नेपाल से गुड़, फाफर, मडुवा, मसाले, तम्बाकू एवं चावल आदि खाद्य एवं वस्त्र तिब्बत ले जाया करते थे एवं तिब्बतियों से इसके बदले भेड़, बकरी, ऊन, नमक, सोहागा, पशम, सोना, मक्खन आदि लेकर आते थे जिन्हें नेपाल एवं भारत के गांवों में बेचते थे। शौकाओं का यह व्यापार मात्र व्यापार नहीं था वरन् दो संस्कृतियों के समागम के साथ ही आपसी भाईचारे एवं प्रेम का प्रतीक भी था। प्रतयेक व्यापारी का एक मित्र होता था जिसका उसके आगमन पर अच्छा स्वागत किया जाता था। मित्र को भेंट दी जाती थी तथा मित्र के सामान क्रय करने के बाद ही अन्य व्यापारियों को सामान विक्रय किया जाता था। इस व्यापार की एक खास पद्वति यह था कि एक स्लेट के प्रकार के पत्थर के दो टुकड़े किये जाते थे एवं दोनों मित्रों के पास एक–एक टुकड़ा रहता था। इससे तात्पर्य यह था कि कभी असमंजस होने पर अथवा मित्र की अनुपस्थिति में उसके प्रतिनिधि द्वारा अपने 'स्लेट' का हिस्सा दिखाकर एवं दोनों को जोड़कर इस बात की पुष्टि की जाती थी कि यह ही मेरा मित्र अथवा मित्र का प्रतिनिधि है। इस पद्धति द्वारा व्यापार को 'गमग्या छोंड़' कहते थे। तिब्बती भाषा में 'गम' का अर्थ स्लेट की तरह का पत्थर, 'ग्या' का अर्थ जोड़ना एवं 'छोंड़' व्यापार को कहते थे। जबकि शौका बोली में व्यापार को 'पन' एवं व्यापारी को 'पनचा' कहते है। तकलाकोट मण्डी जिसे 'तक–ला–खर' भी कहा जाता है, में प्रत्येक शौका व्यापारी की दुकानों के लिए जमीनें थी जहॉ दुकानों के लिए चारों ओर दीवारें बनाकर ऊपर से टैन्ट डालकर दुकान बनायी जाती थी।

व्यापार के लिए तिब्बत को कुछ 'कर' भी देय थे, ये 'कर' भी कई प्रकार के थे जैसे छोङ ठ्ल (छोङ–व्यापार, ठ्ल–कर) अर्थात व्यापार कर, रौङ ठ्ल (रौङ–शौका जमीन, जहां शौका अपनी दुकानें लगाते थे, ठ्ल–कर) अर्थात् शौका दुकानों के लिए कर, प्युङकर (दबाव कर), सा ठ्ल (सा–मिट्टी, ठ्ल–कर) अर्थात् दर्रे पार करने का कर या ठ्ल (या–सूर्य की रोशनी, ठ्ल –कर), अर्थात तिब्बत पर पड़ने वाली रोशनी के प्रयोग पर कर, लुक ठ्ल (लुक–भेड़, ठ्ल–कर) भेड़ों पर कर। ये कर मात्र शौका व्यापारियों को ही देय नहीं थे वरन् तिब्बती व्यापारियों को भी कुछ कर देय थे। कर एकत्र करने के लिए तिब्बती अधिकारी नियुक्त थे। जोंगपेन (तिब्बती जिलाधिकारी) के अतिरिक्त लबरङ, डबजङ आदि अधिकारी व्यापरियों से कर वसूलते थे।

30 सितम्बर 1950 को चीन द्वारा अधिकारिक रूप से तिब्बत को चीन का हिस्सा घोषित करने के पश्चात् इस व्यापार पर भी चीनियों ने आधिपत्य कर लिया। अब इस व्यापार की बागडोर चीनियो के हाथ में थी परन्तु तब भी व्यापार में कोई बहुत परिवर्तन नहीं आये। 1962 में भारत–चीन युद्व के पश्चात चीन ने भारतीय व्यापारियों पर प्रतिबन्ध लगा दिया। तब भोटिया समुदाय अपने एकमात्र व्यवसाय से अलग हो गये। यही इस व्यापार का सबसे बड़ा बदलाव था और तभी शौकाओं का इस व्यापार पर एकछत्र राज हो गया। शौका पूर्ववत इस व्यापार में जाते रहे। इन पर कोई प्रतिबन्ध नहीं था। बदले स्वरूप में जहां अब व्यापार मात्र शौका एवं तिब्बतियों तक सिमट गया वहीं चीनी संस्था 'ऊमाकूङसी' दोनों व्यापारियों से वस्तुएँ क्रय करती थी जिससे जहॉ 'गम ग्या छोड़' पद्वति द्वारा व्यापार की प्रथा समाप्त हुई वही दोनों व्यापारियेां को लाभ का प्रतिशत भी कम हुआ। परन्तु अब भी शौका व्यापारियों को लाभ था। क्योंकि उनके व्यापारिक प्रतिद्वंदी भोटिया के लिए व्यापार प्रतिबंधित हो गया था परन्तु 'ऊमाकूङसी' के आने से छोटे शौका व्यापारियो को व्यापार में हानि हुई क्योंकि बड़े व्यापारियों ने 'ऊमाकूङसी' के अधिकारियों से अच्छे सम्बन्ध बना लिये जिसका उन्हें व्यापारिक लाभ मिला।

आज 40 वर्ष पश्चात् तिब्बत व्यापार का स्वरूप बिल्कुल परिवर्तित हो चुका है। अब 'ऊमाकूङसी' का कार्य स्वरूप भी परिवर्तित होकर मात्र सरीकारी खरीरदारी तक सीमित रह गया है। तकलाकोट जो पठारी क्षेत्र है आज एक आधुनिक शहर सा प्रतीत होता है। चीन सरकार में शौका व्यापरियों के लिए 20 पक्की दुकानें बनाई जिनके लिए लगभग रू0 8000/–प्रतिवर्ष किराया देय है। करनाली नदी के पास चीनी व्यापारियों का अपना अलग बड़ा बाजार है जहॉ सिन्जयंग (झिनझियांग प्रदेश के चीनी व्यापरियों) एवं नङमी (तकलाकोट के तिब्बती) व्यापारियों की दुकानों के अतिरिक्त सरकारी दुकानों है। कुछ आगे जाने पर

बड़ी–बड़ी इमारते हैं जहॉ चीनी कार्य्रालय, बैंक, होटल एवं डांस क्लब है। यह बाजार किसी बड़े शहर का सा आभास कराता है। आज तकलाकोट में वे सभी वस्तुऍ मिलनी संभव हैं जो कभी भारत एवं नेपाल से व्यापारियों द्वारा ले जायी जाती थी। सन् 1985 के बाद से ही शौका व्यापारी तिब्बत से ऊन का आयात कम कर चुके है क्योंकि 1985 के बाद ऊन तकलाकोट से तिब्बत की राजधानी 'ल्हासा' होते हुए काठमांडू पहुंचने लगी हैं जिससे काठमांडू में व्यापारियों को ऊन पहले की अपेक्षा सस्ते दामों पर उपलब्ध होने लगी है। क्योकि उस मार्ग में यातायात के आधुनिक साधन हैं जबकि शौकाओं द्वारा ऊन तिब्बत से खच्चर, झुप्पओं पर दार्चुला लाई जाती थी जहां से वे भारतीय मार्ग से टनकपुर के रास्ते नेपाल भेजकर काठमांडू पहुंचाते थे। जिससे काठमांडू में व्यापारियों को ऊन ऊचे दामों पर उपलब्ध होती थीं ऊन के नये मार्ग ने शौका व्यापारियो के व्यापार पर बहुत अधिक प्रभाव डाला वहीं 1992 मे भारत चीन के साझे प्रयासों से भारतीय के लिए तिब्बत व्यापार पर से प्रतिबन्ध हटा दिया गया तो भोटिया व्यापारी पुनः तिब्बत व्यापार जाने लगे जिससे व्यापारिक प्रतिस्पर्धा बढ़ गयी परन्तु ऊमाकूङसी एवं शौका व्यापरियों के लम्बे सम्बन्धों के चलते शौका व्यापारियों पर इसका बहुत फर्क नहीं पड़ा लेकिन यहां भी छोटे शौका व्यापारियों में से कई व्यापारी अब यहां जाना छोड़ चुके है। उनका मानना है कि व्यापार में अब पहले जेसा मुनाफा नहीं रह गया है। आज शौका बर्तन से लेकर सौन्दर्य प्रशाधन, खाद्य पदार्थ, चाय, काफी, गुड़, बकरी, सोहाग, पशम, चीनी मदिरा, वस्त्र, इलैक्ट्रॉनिक्स उत्पाद आदि सभी वस्तुऍ लेकर आते हैं।

आज जहां पारम्परिक तिब्बत व्यापार का स्वरूप परिवर्तित हो चुका है वहीं यह व्यापार यातायात की दृष्टि से शौकाओं के लिए आज भी वहीं का वहीं है वरन् दुर्गम रास्तों का खतरा और अधिक हो गया है। घोड़े, खच्चर, झुप्पओं पर लदा सामान एवं इनका काफिला देखने में बड़ा स्मणीय दृश्य उत्पन्न करता है परन्तु इस व्यापार एवं इसकी परेशानियों का दर्द शौका ही बता सकते हैं आज व्यापार का बदला स्वरूप शौका व्यापारियों के लिए एक चुनौती यह भी खड़ी करता है कि वहॉ कौन–कौन सी वस्तुऍ ले जायी जायें। प्रतिदिन टूटते मार्ग और भूस्खलन शौकाओं की स्थिति ओर भी जटिल बना देता है। ऐसे में भी इस व्यापार में बने रहना शौका व्यापारियों के लिए एक चुनौती है। छोटे व्यापरी जो अब इस व्यापार से हार मान चुके है शनैःशनैः व्यापार में जाना बन्द कर रहे हैं। तब भी यदि यातायात मार्ग की दशा अच्छी हो तो ये व्यापारी व्यापार नहीं छोड़ेंगे क्यांकि यहीं इनकी आजीविका का प्रमुख स्रोत है।

वर्तमान व्यावसायिक स्थिति :

व्यापारिक समुदाय होने के फलस्वरूप अधिकांश शौका आर्थिक रूप से सुद्ढ़ दिखाई पड़ते हैं किन्तु व्यापार की वर्तमान स्थिति, शिक्षा का प्रचार–प्रसार, आधुनिकीकरण एवं तिब्बत व्यापार के विकल्प की खोज ने शौका समुदाय को अन्य व्यवसायों की ओर भी मोड़ा हैं आज शौका अन्य व्यवसाय जैसे ठेकेदारी, दुकान एवं अन्य छोटे–मोटे व्यवसायों की ओर आकर्षित हुए हैं एवं कुछ शौका अपने आपको उन व्यवसायों मे पूर्णतः स्थापित कर चुके है। शिक्षा का प्रचाार प्रसार के फलस्वरूप शौकाओं ने अपने बच्चों को शिक्षा की ओर मोड़ा। इसी का परिणाम है कि आज शौका सरकारी, अर्द्वसरकारी, सेवाओं में दिखाई पड़ते है परन्तु आज भी कई परिवार हैं जिनकी आपके निश्चित स्रोत नहीं हैं कई परिवार कताई–बुनाई एवं अन्य छोटे–मोटे काम करके अपनी आजीविका चलाते है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

बिष्ट, बी0ए0 1994 ट्राइब्स आफ इण्डिया, नेपाल एण्ड तिब्बत बोर्डरलैण्डःए स्टडी आफ कलचरल ट्रान्सफोरमेशन, ज्ञान पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।

गोस्वामी, वी0पी0 1972 दि ट्राइबस आफ आसामः ए फ्यू कमेन्टस आन देयरसोसियल एण्ड कल्चरल टाइज विद नान ट्राइब्स,इन ट्राइबल सिचुएशन इन इण्डिया, वाई के0एस0 सिंह, इण्डियन इंस्टीट्यूट आफ इडवान्स स्टडी, शिमला।

मजूमदार, डी0एन0 1972 ए स्टडी आफ ट्राइब्स कास्ट कन्टीन्यूम एण्ड दि प्रोसेस आफ संस्कृताइजेशन अमंग दि बोडो स्पीमिग ट्राइब्स आफ आसाम इन ट्राइबल सिचुएशन इन इण्डिया, वाई के0 कुरेश सिंह, इण्डियन इन्स्टीट्यूट आफ एडवान्सड स्टडी, शिमला।

प्रसाद, सैलेश्वर 1974 वेयर दि थ्री ट्राइब्स मीट, इण्डियन नेशनल पब्लिकेशन्स इलाहाबाद।

शेरिंग, सी0ए0 1974 वेस्टर्न तिब्बत एण्ड द इण्डियन बार्डरलैण्ड, कोस्मो पब्लिकेशन्स